मध्यकालीन भारत का इतिहास

[HISTORY OF MEDIEVAL INDIA]

(1200 ई. से 1761 ई. तक)

विभिन्न विश्वविद्यालयों हेतु यू. जी. सी. मॉडल पाठ्यक्रम पर आधारित

लेखक

डॉ. एस. आर. वर्मा

भूतपूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, इतिहास स्नातकोत्तर विभाग

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर

2011

SBPD BOOKS

एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस

मुगलकालीन इतिहास के स्रोत
(SOURCES OF THE HISTORY OF MUGHAL PERIOD)

मुगल काल के इतिहास के विषय में पर्याप्त मौलिक साधन प्राप्त होते हैं। जब हम इस सामग्री की तुलना सल्तनत काल के इतिहास स्रोतों से करते हैं तो अन्तर स्पष्ट हो जाता है। सल्तनत काल की इतिहास सामग्री पूर्णतया एकपक्षीय है। मुस्लिम इतिहासकारों ने एक विजेता के दृष्टिकोण से लिखा जिसमें हिन्दू धर्म तथा समाज की निन्दा की गयी और हिन्दुओं पर अत्याचारों को इस्लाम धर्म के अनुकूल बताया गया है। सल्तनत काल का सम्पूर्ण इतिहास धर्म-केन्द्रित है। इस प्रकार की कुछ परम्परा मुगल काल में भी चलती रही। इसका कारण यह है कि इस्लाम की प्रकृति ऐसी है कि इतिहासकार के दृष्टिकोण को पूर्ण रूप से आच्छादित रखता है लेकिन मुगल काल की शान्ति तथा सम्राटों की उदार नीति का प्रभाव इतिहास लेखकों पर भी पड़ा और अब वे अन्य धर्म-निरपेक्ष विषयों को भी इतिहास लेखन में सम्मिलित करते हैं। मुगल काल में कुछ हिन्दू इतिहास लेखक भी हुए जो प्रायः प्रशासन से सम्बन्धित थे और उनका सीमित लेखन उपलब्ध है।

मुगल इतिहास के स्रोत निम्नलिखित हैं—

बाबरनामा—तुजुक-ए-बाबरी या बाबरनामा मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर की आत्मकथा है। बाबर की मूल आत्मकथा तुर्की भाषा में है। इसका पहला फारसी अनुवाद बाबर के सद्र-उस-सुदूर शेख जैनुद्दीन ख्वाजा ने किया था। अकबर के आदेश पर अबुल फजल ने इसका अनुवाद फारसी में किया। अंग्रेजी में श्रीमती बेवरिज ने इसका अनुवाद मूल तुर्की ग्रन्थ से किया है।

बाबर के काल के लिए 'बाबरनामा' प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत है। बाबर ने सभी घटनाओं का तथ्यात्मक वर्णन किया है। स्वयं अपनी दुर्बलताओं तथा गल्तियों का भी वर्णन उसने स्पष्ट रूप से किया है। उसने अपने दोषों, नशे की आदतों, दावतों के बारे में कुछ भी नहीं छिपाया है। यही कारण है कि बाबर को विश्व का श्रेष्ठ 'आत्मकथा लेखक' माना जाता है। उसने भारत का भी वर्णन विस्तार से किया है। भारत की समृद्धि की उसने प्रशंसा की है लेकिन अन्य बातों में निन्दा की है। एक प्रवासी के समान वह अपनी मातृभूमि का यशोगान करता है और विदेश की निन्दा करता है। बाबर ने अपना वर्णन सिंहासन पर बैठने से आरम्भ किया और 1529 ई. तक किया है लेकिन बीच-बीच में उसका वर्णन कुछ वर्षों के लिए छूट गया है। बाबरनामा में उसके कुल 18 वर्षों का वर्णन ही प्राप्त है। यह अन्तराल 1503-4, 1508-19, 1520-25 का है।

हबीब-उस-सियर—इसका लेखक मीरखोन्द है। उसने इस ग्रन्थ की रचना 1521 ई. में आरम्भ की थी और 1529-30 ई. में इसे समाप्त कर दिया। इसमें पैगम्बर, खलीफाओं, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, चंगेज खाँ तैमूर आदि का वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ बाबर के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण है। लेखक ने मध्य एशिया के इतिहास का वर्णन किया है। हिन्दुस्तान आने के पूर्व बाबर के इतिहास का यह आवश्यक स्रोत है।

तारीख-ए-रशीदी—इसका लेखक मिर्जा हैदर दुगलात बाबर का मौसेरा भाई था। उसे तत्कालीन घटनाओं का व्यक्तिगत ज्ञान था। यह रचना फारसी में है। लेखक ने बाबर और हुमायूँ के काल की घटनाओं का वर्णन किया है। उसका पिता हेरात का शासक मुहम्मद हुसैन मिर्जा था। उसने अपनी सैनिक योग्यता से बाबर को प्रभावित किया था। उसने बाबर के काल के युद्धों में भाग लिया था और हुमायूँ-शेरशाह का संघर्ष भी उसने देखा था। कन्नौज के युद्ध के बाद जब हुमायूँ लाहौर में था और उसने सिंध जाने का निर्णय किया, उस समय मिर्जा हैदर उसके निर्णय से सन्तुष्ट नहीं हुआ और उसका साथ छोड़कर कश्मीर चला गया। उसने कश्मीर पर आक्रमण करके उसे जीत लिया और 1542 ई. में उसका कत्ल कर दिया।

मिर्जा हैदर बाबर के पूर्वजों, मध्य एशिया तथा भारत में उससे सम्बन्धित घटनाओं, हुमायूँ और उसके भाइयों के साथ सम्बन्ध, युद्धों का वर्णन किया है। तारीख-ए-रशीदी दो भागों में है—प्रथम भाग में बाबर और हुमायूँ से सम्बन्धित तथा दूसरे भाग में स्वयं से सम्बन्धित कश्मीर की घटनाओं का वर्णन किया है।

कानून-ए-हुमायूँनी—इसका लेखक गियासुद्दीन मुहम्मद खोंदमीर है। वह बाबर तथा हुमायूँ के दरबार में एक प्रतिष्ठित विद्वान था। उसने इस ग्रन्थ की रचना हुमायूँ के आदेश पर की थी। खोंदमीर ने हुमायूँ के काल की जिन घटनाओं का वर्णन किया है, उनका वह प्रत्यक्षदर्शी था। उसकी रचना प्रामाणिक है। उसने दरबार के नियमों, रीति-रिवाजों का वर्णन किया है। एक दरबारी इतिहासकार होने के कारण वह हुमायूँ का

यशोगान करता है। उसने हुमायूँ को सिकन्दर-ए-आज़म, खुदा का साया जैसी उपाधियाँ दी हैं। फिर भी हुमायूँ के काल के लिए यह महत्वपूर्ण स्रोत है।

हुमायूँनामा—इस ग्रन्थ की रचना गुलबदन बेगम ने की थी। वह हुमायूँ की बहिन थी। यह ग्रन्थ फारसी भाषा में है। बाबर की मृत्यु के समय वह आठ वर्ष की थी। हुमायूँ ने उसकी परवरिश की थी। जब हुमायूँ कन्नौज की हार के बाद ईरान चला गया, गुलबदन बेगम काबुल में रही। हुमायूँ की वापसी पर वह प्रसन्न हुई। उसने हुमायूँ और कामरान के मध्य उन युद्धों का विस्तृत वर्णन किया है जो अफगानिस्तान में हुए थे। इस ग्रन्थ की रचना अकबर के शासन काल में हुई थी। अकबर की इच्छा थी कि बाबर और हुमायूँ की घटनाओं को लिपिबद्ध किया जाये। विशेष रूप से वे लोग इन्हें लिपिबद्ध करायें जो उनके प्रत्यक्षदर्शी रहे थे। इस सिलसिले में दो ग्रन्थों की रचना हुई—गुलबदन बेगम का 'हुमायूँनामा' और जौहर आफताबची का 'तजकिरा'।

ताजकीरात--उल-वाकियात—इसकी रचना जौहर आफताबची ने की थी जो हुमायूँ का व्यक्तिगत सेवक था। जौहर ने भी गुलबदन बेगम के समान इसे स्मृति के आधार पर लिपिबद्ध किया था। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि इन ग्रन्थों की रचनाएँ हुमायूँ की मृत्यु के तीस वर्षों बाद हुई थी। अतः स्वाभाविक है कि इनके वर्णन में त्रुटियाँ हो जायें। फिर भी इतिहासकार जौहर के वर्णन को अधिक प्रामाणिक मानते हैं। जौहर ईरान में हुमायूँ के साथ कुछ समय तक रहा था। इसके बाद भारत आगमन तथा हुमायूँ की मृत्यु तक वह हुमायूँ के साथ रहा। जिन घटनाओं का वर्णन उसने किया है, उनका वह प्रत्यक्षदर्शी था।

तारीख-ए-शेरशाही—इसका लेखक अब्बास खाँ सरवानी है। वह अकबर की सेवा में था और उसने इसकी रचना अकबर के आदेश पर की थी। इस ग्रन्थ को तोहफा-ए-अकबरशाही भी कहा गया है। अब्बास खाँ ने ग्रन्थ को बहलोल लोदी से आरम्भ किया है लेकिन इस ग्रन्थ का महत्व शेरशाह तथा इस्लामशाह के शासन कालों के वर्णन में है। वह चौसा युद्ध का वर्णन करता है। उसने कन्नौज के युद्ध का अधिक विस्तृत वर्णन किया है। उसने शेरशाह की विजयों तथा उसके प्रशासन का भी वर्णन किया है।

वाकियात-ए-मुश्ताकी—अकबर के शासन काल में रिजकुल्लाह मुश्ताकी ने इस ग्रन्थ को लिखा था। इसमें लोदी काल से अकबर के काल तक की घटनाओं का वर्णन है। मुश्ताकी ने हुमायूँ और शेरशाह के युद्धों का वर्णन किया है। उसने शेरशाह की विजयों तथा प्रशासनिक नीतियों का भी वर्णन किया है। इसका महत्व यह है कि इसमें उमरा वर्ग के बारे में कुछ घटनाएँ प्राप्त होती हैं जो स्मृति के आधार पर लिखी गयी हैं। इसमें ऐसी कुछ कहानियों का भी वर्णन हुआ है जिनसे तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक दशा पर भी प्रकाश पड़ता है।

तारीख-ए-शाही—इसका लेखक अहमद यादगार है। वह स्वयं को सूर सुल्तानों का सेवक बताता है। उसने इस ग्रन्थ की रचना बंगाल के अफगान शासक दाऊदशाह के आदेश पर की थी। वह बहलोल लोदी से हेमू के कत्ल करने तक की घटनाओं का वर्णन करता है। लेखक का खास उद्देश्य अफगान सुल्तानों का इतिहास लिखना है। उसने बाबर, हुमायूँ और अकबर के काल का इतिहास भी लिखा है। इस ग्रन्थ में भी यही दोष है कि लेखक ने कहानियों में विशेष रुचि प्रदर्शित की है।

तजकिरा-ए-हुमायूँ व अकबर—इस ग्रन्थ की रचना बायजीद बयात ने की है। वह अकबर के काल में शाही रसोई के प्रबन्धक के पद (बकावल बेगी) पर था। अकबर ने इतिहास लिखने का सामान्य आदेश दिया था, बायजीद ने उसी के अन्तर्गत इस ग्रन्थ की रचना की थी। इसके लिए अबुल फजल ने उसे एक लेखक प्रदान किया था। बायजीद तुर्क था। वह 1544 ई. में हुमायूँ का सेवक नियुक्त हुआ था जब हुमायूँ ईरान में था। वह मुनीखाँ की सेवा में रहा जब वह काबुल का गवर्नर था। बायजीद ने 1555 ई. के बाद की अनेक घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है। अकबर के शासन काल के लिए यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण स्रोत है।

नफाइस-उल-मआसिर—इस ग्रन्थ की रचना मीर अलाउद्दौला कजवीनी ने अकबर के शासन काल में की थी। कजवीनी अकबर के दरबार में कवि था। उसने इस ग्रन्थ में कवियों की जीवनियों का विवरण दिया है। इतिहास के स्रोत के रूप में, इस ग्रन्थ में 1565 ई. से 1575 ई. तक की घटनाओं का विवरण पाया जाता है।

तारीख-ए-अकबरी—इस ग्रन्थ का लेखक आरिफ कंधारी बैरम खाँ की सेवा में था। इसके बाद वह मुजफ्फर खाँ की सेवा में रहा। वह कुछ समय पंजाब में दीवान-ए-सआदत भी रहा। इस ग्रन्थ में उसने अकबर के काल की घटनाओं का 1585 ई. तक का वर्णन किया है। लेखक ने अकबर के सुधारों, विशेष रूप से कृषि सम्बन्धी सुधारों का विवरण दिया है और उनकी प्रशंसा की है।

तारीख-ए-अल्फी—इस ग्रन्थ की रचना अकबर के आदेश पर, इस्लाम के 1,000 वर्ष पूरे होने पर की गयी थी। इसे पैगम्बर हजरत मुहम्मद के काल से आरम्भ किया है। अकबर ने इसकी रचना के लिए सात विद्वानों का एक बोर्ड नियुक्त किया था लेकिन यह बोर्ड ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर सका। इसलिए इसे पूरा करने का उत्तरदायित्व मुल्ला अहमद घटवी को दिया गया। उसने 1294 ई. तक का वर्णन किया। इसके बाद आसफ खाँ जफर बेगम ने इसे 1589 ई. तक पूरा किया। 1591 ई. में बदायूँनी ने इसके पुनरीक्षण का कार्य किया।

अकबरनामा—इस ग्रन्थ की रचना अबुल फजल ने की है। वह फारसी और अरबी का विद्वान था। वह 1575 ई. में अकबर के दरबार में आया और इसके बाद अनेक ऊँचे पदों पर रहा। उसे अकबर तथा उसके प्रशासन, नीतियों, व्यक्तित्व आदि के बारे में व्यक्तिगत ज्ञान था। इस विशाल ग्रन्थ को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—प्रथम भाग में अकबर का जन्म, तैमूरियों की वंशावली, बाबर-हुमायूँ का विवरण है। द्वितीय भाग में अकबर के राज्यारोहण से 17वें वर्ष तक का विवरण है। यह ग्रन्थ 1596 ई. में पूरा किया गया। अबुल फजल अकबर का घनिष्ठ मित्र और परामर्शदाता भी था। उसने अकबर के प्रशासन, विजयों, नीतियों आदि का विस्तृत विवरण दिया है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उसे अकबर की आध्यात्मिक शक्ति तथा बौद्धिक ज्ञान में अपरिमित विश्वास था। अतः उसका वर्णन व्यक्ति-पूजा के समान है। यही कारण है कि स्मिथ अबुल फजल को चाटुकार कहता है। दूसरी ओर, ब्लोचमैन 'अकबरनामा' को महत्वपूर्ण स्रोत मानता है। उसका कहना है कि अगर अबुल फजल की अलंकारमयी फारसी से अतिशयोक्ति निकाल दी जाये तो विवरण के वास्तविक स्वरूप को समझा जा सकता है।

आईन-ए-अकबरी—इस ग्रन्थ का रचनाकार अबुल फजल है। वास्तव में, यह ग्रन्थ अकबरनामा का तीसरा भाग है। इसमें पाँच हिस्से हैं। प्रत्येक हिस्से में राज्य के नियमों का वर्णन किया गया है। पहले भाग में 10, दूसरे भाग में 30, तीसरे भाग में 16 नियम हैं। चौथे हिस्से में हिन्दुस्तान की ऋतुओं, फसल आदि का वर्णन है। इसी के साथ हिन्दुओं के दर्शन, साहित्य आदि का विवरण दिया गया है। साथ में सन्तों और सूफियों का विवरण भी है। पाँचवें हिस्से में अकबर की कहावतें तथा अबुल फजल की आत्मकथा है। इसमें अकबर के प्रशासन, राजनीतिक व्यवस्था आदि का वर्णन है। प्रशासन के स्रोत के रूप में यह रचना मध्य काल की अनुपम कृति है।

मुन्तखब-उत-तवारीख—इस ग्रन्थ का लेखक मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी है। वह अकबर का दरबारी था। अकबर ने उसे इमाम नियुक्त किया था। अबुल फजल के सम्राट पर प्रभाव के कारण बदायूँनी का महत्व कम हो गया था। बदायूँनी कट्टर रूढ़िवादी सुन्नी मुसलमान था। उसने अकबर की उदारवादी नीति की कड़ी निन्दा की है। उसने इस ग्रन्थ की रचना गुप्त रूप से की थी जिससे अकबर के काल में इस ग्रन्थ के बारे में लोगों को मालूम नहीं था।

तबकात-ए-अकबरी—इस ग्रन्थ का लेखक निजामुद्दीन अहमद है जो अकबर का मीरबख्शी था। उसका पिता बाबर और हुमायूँ के काल में उच्च पदों पर रहा था। उसे अकबर के शासन काल की घटनाओं का ज्ञान था, अतः उसका ग्रन्थ इस काल का महत्वपूर्ण इतिहास स्रोत है। निजामुद्दीन ने 997 ई. से 1593 ई. तक का इतिहास प्रस्तुत किया है लेकिन इसका महत्व मुगल काल के इतिहास के लिए है। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि निजामुद्दीन ने प्रान्तीय मुस्लिम राज्यों का वर्णन किया है। इससे इस ग्रन्थ का महत्व बढ़ जाता है। इसमें अबुल फजल की तरह अलंकारप्रियता तथा प्रशंसा और बदायूँनी की तरह धार्मिक कट्टरता नहीं है।

तुजुक-ए-जहाँगीरी—यह ग्रन्थ जहाँगीर की आत्मकथा है। जहाँगीर ने अपने 12 वर्षों के शासनकाल का वर्णन स्वयं लिखा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शेष सात वर्षों का वर्णन मोअतमिद खाँ ने लिखा। वह जहाँगीर का मीरबख्सी था। इस परिवर्तन का कारण सम्भवतः जहाँगीर का खराब स्वास्थ्य था। इसमें जहाँगीर के अभियानों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसमें इस काल के विद्रोहों का विवरण भी दिया गया है। जहाँगीर ने दरबार के उत्सवों का वर्णन किया। उसने प्रकृति, पशु, पक्षियों आदि का भी वर्णन किया है लेकिन उसने खुसरो, परवेश, शहरयार, नूरजहाँ के साथ विवाह की घटनाओं का वर्णन संक्षेप में किया है।

इकबालनामा-ए-जहाँगीरी—इस ग्रन्थ का लेखक जहाँगीर का मीरबख्सी मोतमिद खाँ है। यह ग्रन्थ तुजुक-ए-जहाँगीरी का पूरक है। तुजुक जहाँगीर के शासन काल के 19वें वर्ष तक का विवरण प्रस्तुत करता

है। 'इकबालनामा' में 19वें साल के बाद का इतिहास विस्तार से दिया गया। परम्परा के अनुसार लेखक ने बाबर, हुमायूँ, अकबर के शासनकालों का भी वर्णन किया है। 'इकबालनामा' में तीन भाग हैं। प्रथम में तैमूर का परिवार, बाबर, हुमायूँ का विवरण है। द्वितीय में अकबर और तृतीय में जहाँगीर के कालों का वर्णन है।

मआसिर-ए-जहाँगीरी—इस ग्रन्थ का लेखक कामगार खाँ है। उसने जहाँगीर के काल में यह ग्रन्थ लिखा। वह तुजुक से सामग्री लेता है लेकिन शाहजहाँ के विद्रोह तथा उसके राज्यारोहण के बारे में वह महत्वपूर्ण विवरण देता है।

पादशाहनामा (बादशाहनामा)—शाहजहाँ के काल में 'पादशाहनामा' नाम के तीन ग्रन्थों की रचना की गयी—(1) शाहजहाँ के आदेश पर मुहम्मद अमीन कजवीनी ने शाहजहाँ के काल के पहले दस वर्षों का इतिहास लिखा। (2) शाहजहाँ के आदेश पर अब्दुल हमीद लाहौरी ने इस काल के प्रारम्भ से 20 वर्षों तक का इतिहास लिखा। (3) मुहम्मद वारिस ने सम्राट के आदेश पर लाहौरी का काम पूरा करने का आदेश दिया। लाहौरी वृद्ध हो गया था और वारिस उसका शिष्य था। वारिस ने भी 21वें वर्ष से 30 वर्ष तक का इतिहास लिखा।

अमल-ए-सालिह—इसका लेखक मुहम्मद सालिह कम्बू शाहजहाँ के दरबार में 500 का मनसबदार था। उसने शाहजहाँ के पूरे काल का इतिहास लिखा है। इस ग्रन्थ का महत्व यह है कि इसमें शाहजहाँ के अन्तिम दो वर्षों का इतिहास मिलता है जो वारिस में नहीं है। सालेह ने इस काल के शायरों तथा उलमा का वर्णन भी किया है।

तारीख-ए-शाहजहाँनी—इसका लेखक सादिक खाँ शाहजहाँ के दरबार में एक उच्च मनसबदार था। उसने शाहजहाँ के पूरे काल का इतिहास लिखा है लेकिन उसने शाहजहाँ के आठ वर्ष के बन्दी जीवन के बारे में कुछ नहीं लिखा है क्योंकि इसे वह बेअदबी मानता है।

चहार-चमन—इसका लेखक चन्द्रभान ब्राह्मण है। उसने शाहजहाँ के चारों दीवानों के साथ काम किया था। अतः उसे प्रशासन का अच्छा ज्ञान था। उसने इस ग्रन्थ में तत्कालीन प्रशासन का वर्णन किया है। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण स्रोत है।

मुन्तखब-उल-लुवाब—इसका लेखक हाशिम खाफी खाँ है। इस ग्रन्थ को तारीख-ए-खाफी खाँ भी कहा गया है। वह औरंगजेब के दरबार में उच्च पद पर था। बाद में वह प्रथम निजाम, निजामु-उल-मुल्क का दीवान बना। उसने बाबर के आक्रमण से मुहम्मद शाह के प्रथम 15 वर्षों तक का ऐतिहासिक विवरण दिया है। औरंगजेब के काल में दक्षिण भारत के इतिहास के लिए यह महत्वपूर्ण स्रोत है। वह एक योग्य इतिहासकार है और उसने निष्पक्षता से लिखने का प्रयत्न भी किया है। वह शिवाजी की प्रशंसा करता है लेकिन उन्हें अफजल खाँ के वध के लिए उत्तरदायी मानता है। खफी खाँ ईरानी था। अतः उसने मुगल दरबार की गुटबाजी में ईरानी बल का समर्थन करके तूरानी बल की आलोचना की है।

नुस्ख-ए दिलकुशा—इस ग्रन्थ का लेखक भीमसेन था। वह औरंगजेब की सेवा में था लेकिन इसे छोड़कर वह बुन्देला दलपतराव की सेवा में चला गया। अधिकांश समय वह दक्षिण में रहा। उसने दक्षिण में मुगल-मराठा युद्धों का वर्णन किया है। उसने कृषकों की दुर्दशा, बरबादी का भी वर्णन किया है। मुगलों के भ्रष्टाचार, सैनिक दुर्बलता का भी उसने वर्णन किया है। इस काल के लिए यह एक आवश्यक स्रोत है।

मआसिर-ए-आलमगीरी—इसका लेखक साकी मुस्तैद खाँ औरंगजेब की सेवा में था। उसने औरंगजेब के शासन के 11वें वर्ष से 20वें वर्ष तक का इतिहास लिखा है। उसने अधिकारियों के बारे में महत्वपूर्ण विवरण दिया है।

खुलासात-उत-तवारीख—इसका लेखक सुजानराय खत्री है। उसने कई मुगल सरदारों के यहाँ मुंशी का काम किया था। उसने महमूद गजनवी से इतिहास लिखा है लेकिन उसके विवरण का महत्वपूर्ण भाग उत्तराधिकार का युद्ध है जो शाहजहाँ के काल में हुआ। इसमें मुगल प्रशासन का भी वर्णन है।

उपरोक्त ग्रन्थों का सीधा सम्बन्ध मुगल इतिहास से है। इनके अतिरिक्त मुगल इतिहास जानने के **'अखबारात'** हैं जिनका संग्रह विशेष रूप से जयपुर में उपलब्ध है। यह संग्रह मूल मुगल फरमान तथा अन्य दस्तावेजों का है। इनके अलावा कुछ अन्य स्रोत भी महत्वपूर्ण हैं, जैसे—**दस्तूर-उल-मल, मकतूबात, मीरात-ए-अहमदी, तवारीख-ए-बंगाला, तारीख-ए-कुतुबशाही, तारीख-ए-काश्मीर।**

लतीफ हुसैनी (नकीब खाँ), मोहम्मद सुल्तान थनेसरी व मुल्काशीरी द्वारा अकबर की आज्ञा से रचा गया जिसकी भूमिका अबुल फजल ने लिखी थी। (C) **तरजुमाए-रामायण**—रामायण के फारसी अनुवाद के लिए बदायूँनी ने 4 पण्डितों की सहायता लेकर अकबर की आज्ञा से इसे 1584 में प्रारम्भ कर 1591 में पूरा कर दिया। (D) **तरजुमा-ए-सिंहासन बत्तीसी**—अकबर के आदेश पर 1574 में बदायूँनी ने इसका अनुवाद कर 1594-95 में इसे संशोधित एवं परिष्कृत करने का कार्य किया। इसमें विक्रमादित्य की न्यायप्रियता, दानशीलता तथा बुद्धिमत्ता का वर्णन है। (E) **मुन्तखब-उत-तवारीख**—इसमें बदायूँनी द्वारा वर्णित है कि उसने 'अथर्ववेद' के अनुवाद, याकूत के भौगोलिक शब्दकोश का, शीर्दा के 'जमीउल तवारीख' के एक भाग का संक्षेप में वर्णन किया था परन्तु अभी तक इसकी पाण्डुलिपियाँ प्राप्त नहीं हुई हैं।

(2) **मौलिक ग्रन्थ**—उपरोक्त के अतिरिक्त बदायूँनी ने निम्नलिखित मौलिक रचनाएँ भी लिखीं, जैसे—

(A) **किताबुल अहादिस**—इसकी रचना बदायूँनी ने 1570-71 में की तथा 1578 ई. में अकबर को पेश किया। इसमें 40 हदीसों पर पैगम्बर हजरत के जेहाद की परम्परा का वर्णन है।

(B) **तारीख-ए-अल्फी**—इसमें इस्लाम की उत्पत्ति से 1,000 वर्षों तक का इतिहास है। इसे अकबर की आज्ञा से 6 व्यक्तियों ने मिलकर लिखा था।

(C) **नजाज-उल-रशीद**—सूफी आन्दोलन और सूफी सन्तों तथा उनके आचार पर लिखी गयी **नजाज-उल-रशीद** की रचना 1591 में पूरी की गई। इससे मेहदवी आन्दोलन पर भी प्रकाश पड़ता है।

(D) **मुन्तखब-उत-तवारीख**—बदायूँनी की सर्वप्रमुख कृति के रूप में विख्यात मुन्तखब-उत-तवारीख को उसने कब लिखना आरम्भ किया, यह निश्चित नहीं है किन्तु इसमें एक स्थान पर उल्लेख मिलता है कि बदायूँनी ने अपना इतिहास लेखन अपने मित्र निजामुद्दीन अहमद की मृत्यु के बाद प्रारम्भ किया। 1596 में अपनी मृत्यु से पहले ही उसने अपनी इस रचना को पूरा कर लिया था लेकिन यह अकबर के शासनकाल में प्रकाश में नहीं आयी। जहाँगीर के शासनकाल में इस पुस्तक के बारे में लोगों को पता चला। इस कृति में उसने लिखा है कि उसने अन्य इतिहासकारों की कृतियों से लाभ प्राप्त किया है। याहिया की तारीख-ए-मुबारकशाही, निजामुद्दीन अहमद की तबकात-ए-अकबरी की सहायता ली। इन दोनों से अधिक उसने ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया। इस कृति में गजनी शासक सुबुक्तगीन से लेकर अकबर के शासन के प्रथम 40 वर्ष के इतिहास का वर्णन है। यह घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए दो जिल्दों में विभाजित है जिसमें पहले में 977 ई. से लेकर हुमायूँ की मृत्यु तक का इतिहास, दूसरे में अकबर के शासनकाल से 40 वर्षों तक का इतिहास है। अंग्रेजी में अनुवादित इस पुस्तक को 3 खण्डों में विभक्त करके प्रकाशित किया गया जिसमें पहले में हुमायूँ की मृत्यु तक का इतिहास, दूसरे में अकबर के शासन के प्रथम 40 वर्ष का इतिहास तथा तीसरे में अकबर के समय के धार्मिक पुरुष, विद्वान्, सूफी सन्तों आदि के जीवन, रचनाओं तथा शिक्षा का विवरण है। इसमें अकबर के दरबार के 38 शेखों, 69 विद्वानों, 15 दार्शनिकों तथा चिकित्सकों और 167 कवियों के बारे में लिखा है।

बदायूँनी के इतिहास लेखन की विशेषतायें—बदायूँनी इतिहास को एक उच्च विज्ञान, शिक्षा की एक उच्च शाखा मानते हैं। उन्होंने मुन्तखब-उत-तवारीख में लिखा है कि उनके इतिहास लेखन का उद्देश्य वास्तविक इतिहास लिखना है लेकिन फिर भी उसके विचार किसी अन्य बात से प्रभावित हो जायें या फिर वह कोई गलती कर जाये तो उसे इस बात की आशा है कि अल्ला उसे माफ कर देगा। वह इतिहास लेखन को अपना कर्तव्य मानकर वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन पर बल देता है लेकिन जो इतिहास हमारे सामने उपस्थित होता है, उसमें बदायूँनी अपने मूल दायित्व का निर्वहन नहीं कर पाया है तथा वह अपने व्यक्तिगत विचारों से प्रभावित होकर अकबर की आलोचना में लग जाता है जिसके कारण उसका लेखन तथा इतिहास व्यक्तिपरक हो जाता है। बदायूँनी द्वारा अकबर की आलोचना का कारण उसका अकबर की उदारवादी बातों से सन्तुष्ट न होना, अबुल फजल की तुलना में उसे कम सम्मान प्राप्त होना तथा उसका उचित पारिश्रामिक न मिलना या उसके पुत्र की मृत्यु के लिये अकबर को जिम्मेदार मानना था। यही नहीं, उसने धार्मिक विचारों से भी प्रभावित होकर इतिहास लेखन किया है। कट्टर सुन्नी मुसलमान होने के कारण वह शिया लोगों से घृणा करता था। इसीलिये उसने हुमायूँ के शासनकाल में शिया-सुन्नी में मतभेद का उल्लेख किया है तथा हिन्दुओं को काफिर मानते हुए उनके विरुद्ध जेहाद की बात करता है। अपने धार्मिक विचारों के प्रभाव के कारण उसने अकबर द्वारा प्रतिपादित दीन-ए-इलाही की निन्दा की और अकबर के ऊपर गैर-इस्लामिक होने का आरोप लगाया। यद्यपि बदायूँनी ने

लिखा है कि उसने जो कुछ भी लिखा है, वह सब सही है किन्तु उसके कथन और लेखन में अन्तर्विरोध दिखाई देता है। उसके द्वारा केवल एक सत्यनिष्ठ इतिहासकार होने का ढोंग किया गया है।

उपरोक्त कमियों के बावजूद भी मुन्तखब-उत-तवारीख को महत्वहीन नहीं कहा जा सकता है। अकबर के इतिहास की जानकारी मुन्तखब-उत-तवारीख में 'तबकात-ए-अकबरी' से अधिक विस्तृत है। इसके अतिरिक्त यह 'अकबरनामा' की झूठी अत्युक्तियों को काटकर सुधार देता है। मार्शल का मानना है कि यह एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें उस काल और युग का पूर्ण चित्रण मिल जाता है। उनका कहना है कि यह अकबर के बारे में जानने का अच्छा साधन है क्योंकि यह उन तत्वों को सही तरीके से उजागर करता है जिसे 'अकबरनामा' में केवल अकबर की प्रशंसा के तौर पर प्रयुक्त किया गया है। इस प्रकार अकबर के सही मूल्यांकन में भी यह सहायक है।

अब्दुल हमीद लाहौरी—मुगल सम्राट शाहजहाँ का दरबारी इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी एक योग्य और विद्वान् व्यक्ति था जिसकी इतिहासकार के रूप में ख्याति से सम्राट शाहजहाँ भी परिचित था। शाहजहाँ की सेवा में आने से पहले ही वह एक अनुभवी उम्र का व्यक्ति हो चुका था। शाहजहाँ द्वारा उसे उसके शासनकाल में वर्णित घटनाओं को लिपिबद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया। उसने शाहजहाँ के शासनकाल पर सूक्ष्म दृष्टि रखते हुए उसे दो भागों में बाँटकर अपनी पुस्तक का नाम 'पादशाहनामा' रखा। इस पुस्तक में उनमें शाहजहाँ के प्रारम्भिक जीवन, उसकी युवावस्था की उपलब्धियों का वर्णन किया है। लाहौरी द्वारा शाहजहाँ के प्रथम बीस वर्षों तक के शासनकाल का वर्णन किया गया है जिसमें उसने अपने पहले इतिहासकार मोहम्मद अमीन कजवीनी द्वारा शाहजहाँ के बारे में प्रदत्त विवरण को अपना मूल स्रोत बनाया और इन स्रोतों में वर्णित घटनाओं को अपनी शैली में लिखा और अनावश्यक रूप से सम्बन्धित विवरण को उसने अपने इतिहास में सम्मिलित नहीं किया।

शाहजहाँ भी अकबर की भाँति इतिहास लेखन को पसन्द करता है। उसके द्वारा लाहौरी से अबुल फजल की 'अकबरनामा' की भाँति एक अति स्मरणीय ग्रन्थ की रचना करने की आशा प्रकट की गयी जिसका लाहौरी द्वारा पूरा सम्मान किया गया और उसके द्वारा सुन्दर लेखन शैली में 'पादशाहनामा' की रचना की गयी। लाहौरी की लेखन शैली प्रभावशाली थी। उसके द्वारा घटनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करके उसका वर्णन अपनी पुस्तक में किया गया किन्तु शाहजहाँ का आश्रित इतिहासकार होने, शाहजहाँ को अप्रिय लगने वाली घटनाओं का वर्णन न करने के कारण उसका वर्णन दोषमुक्त नहीं रहा। इस प्रकार उसके द्वारा वर्णित इतिहास में पक्षपात की सम्भावना दृष्टिगत होने लगी। उसने शाहजहाँ के शासनकाल का वर्णन नकारात्मक उपब्धियों को नजर-अन्दाज कर सकारात्मक उपलब्धियों तक किया।

अपनी काफी उम्र व्यतीत करने के बाद शाहजहाँ के सम्पर्क में आने के कारण वह शाहजहाँ के पूरे शासनकाल का वर्णन नहीं कर पाया। 1648 ई. के बाद लाहौरी को वृद्धावस्था के कारण अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों का सामना करना पड़ा और अन्ततः 1654 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। फिर भी 'पादशाहनामा' उस युग का विवेचन करने में सफल रही। इसमें समकालीन दरबारियों, विद्वानों, चिकित्सकों, शायरों, सूफियों आदि का भी वर्णन प्रमुखता से किया गया है। कुल मिलाकर अब्दुल हमीद लाहौरी ने अपनी पुस्तक 'पादशाहनामा' में शाहजहाँ के शासनकाल की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का सुन्दर वर्णन किया है।

फ्रेंकोई बर्नियर—मुगलकालीन इतिहासकार विशेषकर शाहजहाँ, दारा शिकोह तथा औरंगजेब के प्रारम्भिक पाँच वर्षों के शासनकाल का विवरण अपने यात्रा वृत्तान्त में लिखने वाले बर्नियर का मध्ययुगीन इतिहासकारों में प्रमुख स्थान है। उसने भारत के विभिन्न शहरों की यात्रा कर वहाँ के शासन, रहन-सहन और धार्मिक गतिविधियों की महत्वपूर्ण जानकारी अपने संस्मरण में दी। फ्रांस के एक गाँव जोई में 1620 ई. में कृषक परिवार में जन्मे बर्नियर ने यूरोप के महत्वपूर्ण देशों का भ्रमण कर जानकारी प्राप्त की। 1652 ई. में उसने मैट्रिक की परीक्षा पास की। बाद में औषधि विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद मिस्र की यात्रा पर निकल पड़ा जहाँ कुछ समय व्यतीत किया। मिस्र में भारत भ्रमण का विचार आने पर वह हिन्दुस्तान की यात्रा के लिए निकला। अतः 1658 ई. के अन्त तक सूरत के बन्दरगाह पर उतरा। सूरत से आगरा भ्रमण के दौरान उसकी भेंट दारा शिकोह से होने पर उससे प्रभावित होकर दारा शिकोह ने उसे अपना चिकित्सक नियुक्त कर लिया। दारा शिकोह के पतन के पश्चात् बर्नियर मुगल अमीर दानिशमन्द खाँ के संरक्षण में 1665 ई. तक

रहा। इसी दौरान बर्नियर ने दिल्ली, लाहौर, काश्मीर आदि स्थानों की यात्रा कर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। अन्ततः पेरिस में 1688 में उसकी मृत्यु हो गयी। 1670 ई. में बर्नियर की भारत यात्रा का विवरण एक डायरी के रूप में प्रकाशित किया गया।

ट्रेवल्स-इन-द-मुगल एम्पायर—बर्नियर द्वारा फ्रांसीसी में लिखे गये यात्रा वृतान्त का अंग्रेजी अनुवाद 1671-72 ई. में हेनरी ओल्डवर्ग द्वारा किया गया। 1891 ई. में आर्चिबाल्ड कान्स्टेबल द्वारा इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित कराया गया। 1872 ई. में दिल्ली से इस पुस्तक का तीसरा संस्करण निकला, जबकि कर्नल हेनरी मूर द्वारा 1875 ई. में इस ग्रन्थ का उर्दू अनुवाद किया गया। औरंगजेब के शासनकाल के प्रारम्भ के पहले से लगभग 12 वर्षों तक अन्य शासकों के संरक्षण में रहने के कारण बर्नियर को राजनीति का भली-भाँति ज्ञान हो गया था। उसका तत्कालीन दार्शनिकों से भी सम्पर्क हुआ। अन्ततः उसकी डायरी ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त औरंगजेब के शासनकाल के बारे में उसकी यात्रा वृत्तान्त के अतिरिक्त उसके पत्रों से भी मदद मिलती है जो उसने भारत में निवास करते हुए अपने फ्रांसीसी मित्रों को लिखे थे। उसने अपने यात्रा वृत्तान्त में शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार युद्ध का वर्णन भी किया है।

बर्नियर द्वारा मुगलकालीन रहन-सहन, रीति-रिवाज, तत्कालीन युद्धों के बारे में सही जानकारी दी गयी है। इसके अतिरिक्त उसने अपना विवरण पूर्ण निष्पक्षता के साथ किया है क्योंकि न तो वह दरबारी इतिहासकार था और न ही भारतीय। इसीलिए उसने अपना विवरण किसी व्यक्ति विशेष के बारे में नहीं लिखा है। उसने अपने लेखों में अपने आँखों द्वारा देखी गयी घटनाओं का वर्णन किया है जो विश्वसनीय और सत्यपरक है।

उसने शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध, औरंगजेब द्वारा शाहजहाँ को कैद किया जाना, विदेशियों के मुगल दरबार में आने, शिवाजी द्वारा सूरत-लूट, उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्र आदि सभी घटनाओं का वर्णन उसने अपने यात्रा वृत्तान्त में लिखा है। उसके द्वारा तत्कालीन दो प्रमुख शहरों आगरा और दिल्ली का अलग-अलग विवरण दिया गया है।

बर्नियर ने अपनी पुस्तक में दारा शिकोह का अधिक वर्णन किया है क्योंकि मिस्र से आगरा प्रवास के दौरान उसकी भेंट सर्वप्रथम दारा शिकोह से हुई थी। उसके द्वारा दारा की प्रशंसा की गयी है तथा उसके द्वारा लिखा गया है कि दारा एक धर्म-सहिष्णु व्यक्ति था तथा सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण रखता था। इसके साथ ही उसने शाहजहाँ की कैद के बाद उसके पुत्रों के परस्पर सम्बन्धों के बारे में विस्तृत चर्चा की है। अपने ग्रन्थ के तीसरे अध्याय में उसने फ्रांस के प्रधानमन्त्री कोलबर्ट को लिखे गये पत्र का वर्णन किया है जिसमें भारत के विषय में सम्पूर्ण जानकारी है। उसके द्वारा अपने ग्रन्थ के अन्तिम भाग में मुगलकालीन आर्थिक व्यवस्था तथा राजस्व से प्राप्त होने वाली आय का सम्पूर्ण विवरण दिया गया है। अन्तिम अध्याय में उसने भारत का एक मानचित्र भी दिया है।

जहाँ बर्नियर द्वारा दारा शिकोह व शाहजहाँ की प्रशंसा की गयी है, वहीं औरंगजेब की धार्मिक नीति के कारण उसकी आलोचना की गयी है। बर्नियर द्वारा मुगल समाज, हिन्दू सभ्यता व संस्कृति, हिन्दू समाज के वर्ण व्यवस्था के बारे में उल्लेख किया गया है। बर्नियर ने एक चिकित्सक होने के कारण यहाँ के औषधि, चिकित्सा विज्ञान तथा अन्य भौगोलिक विज्ञान आदि के बारे में उल्लेख किया है किन्तु उसका यह वर्णन पूर्वाग्रह से प्रेरित होने के कारण गलत जानकारी देता है। उसने इन क्षेत्रों में यूरोप को भारत से आगे माना है तथा लिखा है कि चिकित्सा, भौगोलिक ज्ञान तथा अन्य विज्ञानों में भारतीय यूरोपियनों से पिछड़े हैं जो कि पूर्णतः गलत है। इसी प्रकार जहाँ विश्वसनीयता का सवाल आता है, वहाँ उसने अपनी आँखों देखा उत्तराधिकार युद्ध का जो वर्णन किया है, वह पूर्णतः सत्य है। इस प्रकार बर्नियर का 'द ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर' मुगलकालीन शासन, अर्थव्यवस्था, राजनीति को जानने का अच्छा स्रोत है।

अभ्यासार्थ प्रश्न